IJAER/March-April- 2020/Volume-8/Issue-5/Article No-3/ 15-18 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

धर्म, शिक्षा एवं मान्यतायें- एक व्यावहारिक अध्ययन

रमा गुप्ता
एसिस्टैन्ट प्रौफेसर
कालका इन्स्टीट्यूट ऑफ रिसर्च एण्ड एडवान्स्ड स्टडीज
कालकाजी, नई दिल्ली

सारांश-
विश्व में किसी न किसी रूप में प्रार्थना, दुआ, अरदास और प्रेयर के लिए भाषा का प्रयोग किया जाता है। यह इसलिए कि भाषा का सोचने की प्रक्रिया से सीधा सम्बन्ध है ईश्वर, अल्लाह, परमेश्वर कोई भी हो हमारी प्रार्थना, दुआ, प्रेयर उसी भाषा में स्वीकार करते हैं जिसमें भगवान को पुकारा जाता है। भगवान हमारी प्रार्थना को सुनते हैं, हमारी भाषा को नहीं। क्योंकि उसमें भावनायें होती हैं, समर्पण होता है। उस सर्वशक्तिमान के प्रति और इसी से हमें शक्ति प्राप्त होती है। जिससे मनुष्य अपनी समस्याओं से संघर्ष करता है और सफलता प्राप्त करता है। महत्व प्रार्थना का है, भावना का है, समर्पण का है, भाषा या धर्म का नहीं। इस्लाम हो या हिन्दू धर्म मनुष्य को सही दिशा में अग्रसर कर शक्ति और सामर्थ्य के सही उपयोग के लिए ही है।

प्रस्तावना-
दुनिया में अनेकों भाषायें बोली जाती हैं। मुख्यतः अधिकांश देशों की अपनी भाषा है जिसे लोग अपनी दिनचर्या में प्रयोग करते हैं। पढ़ते, लिखते, सीखते और सोचते हैं या फिर व्यवहार में प्रयोग करते हैं। मनुष्य के सोचने की प्रक्रिया मुख्य रूप से उसकी मातृभाषा में ही सामने आती है और व्यवहार में प्रयुक्त होती हैं। जिस भाषा पर व्यक्ति का जितना अधिकार होता है। वह उसी भाषा में सोचता और उसी भाषा में सोचता और उसी को अपने उपयोाग में लाता है। यहाँ यह इसलिए बताया गया है कि जो भाषा मनुष्य को आती है उसी भाषा में हम प्रार्थना, दुआ, अरदास और प्रेयर करते हैं। भारत में लगभग २०० से अधिक बोलियाँ हैं और ऐसी २२ भाषायें हैं जो संविधान में स्वीकृत हैं। इसी प्रकार विश्व में किसी न किसी रूप में प्रार्थना, दुआ, अरदास और प्रेयर के लिए भाषा का प्रयोग किया जाता है। यह इसलिए कि भाषा का सोचने की प्रक्रिया से सीधा सम्बन्ध है ईश्वर, अल्लाह, परमेश्वर कोई भी हो हमारी प्रार्थना, दुआ, प्रेयर उसी भाषा में स्वीकार करते हैं जिसमें भगवान को पुकारा जाता है। भगवान हमारी प्रार्थना को सुनते हैं, हमारी भाषा को नहीं। क्योंकि उसमें भावनायें होती हैं, समर्पण होता है। उस सर्वशक्तिमान के प्रति और इसी से हमें शक्ति प्राप्त होती है। जिससे मनुष्य अपनी समस्याओं से संघर्ष करता है और सफलता प्राप्त करता है। महत्व प्रार्थना का है, भावना का है, समर्पण का है, भाषा या धर्म का नहीं। इस्लाम हो या हिन्दू धर्म मनुष्य को सही दिशा में अग्रसर कर शक्ति और सामर्थ्य के सही उपयोग के लिए ही है। इसका अन्यथा अर्थ लगाना हमारी मूर्खता है।

अशिक्षा बहकाव में बह जाने के अलावा और कुछ नहीं। एक ही धर्म की शिक्षा देने वाले धर्म के ठेकेदार, प्राचीन काल हो या आधुनिक, राजनीतिक नेता, राजा, मौलवी, पण्डित, पादरी कोई भी हो सभी शक्ति, सत्ता और जीविका के लिए धर्म का नहीं धार्मिक विधियों का और कर्मकाण्ड़ों का अधिक से अधिक प्रचार करते आए हैं न कि धर्म में निहित मूल सिद्धान्तों का जैसे-जैसे मनुष्य, अशिक्षा, अज्ञान के साये में घिरता गया धर्म का रूप विकृत होता गया। भारत में सदियों की गुलामी और आक्रान्तों की नीतियों ने अनेकों धार्मिक फसादों का सामना किया। आज भी धार्मिक और राजनीतिक शक्तियाँ अशिक्षित जनता की भावनाओं का फायदा उठाने से नहीं कतराती हैं। यहाँ संस्कृति का विनाश हो या संसाधनों का राजनीति के लिए, सत्ता के लिए सब कुछ जायज है।

जिहाद के लिए हथियार उठाने वाले भी अशिक्षा के कारण केवल सुविधाओं के लिए जोकि निःशुल्क मिलती हैं कि लिए हथियार उठाते हैं। धार्मिक प्रचार असल में उनका उद्देश्य है ही नहीं। ये सभी सिर्फ और सिर्फ दहशत, खून-खराबा और आतंक है। असामान्य जीवन पद्धति को अपनाने वाले सामान्य परिस्थितियों को कैसे स्थापित कर सकते हैं। विभिन्न धर्मों में पायी जाने वाली रीति-रिवाज और परम्परायें तो भिन्न-भिन्न होती हैं परन्तु धर्म की मूल भावना और सिद्धान्तों का एक ही मकसद या उद्देश्य होता है। साथ ही रीति-रिवाज और परम्पराओं के कारण धार्मिक जटिलता बहुत अधिक बढ़ जाती है। धार्मिक विभिन्नताओं का मुख्य कारण भी यही है। इस्लाम, हिन्दू, ईसाई, सिख या अन्य कोई धर्म हो ये धर्म के ही अलग-अलग नाम हैं। धर्म के मकसद को वैज्ञानिक रूप से जानने और समझने की व्यापक रूप से आवश्यकता है। ये कार्य शायद मौलवी और पण्डित न कर सकें और न ही धर्म परिवर्तन में विश्वास रखने वाले पादरी ही ये कार्य कर सकते हैं। इस कार्य के लिए सभी धर्मों के शिक्षित, प्रगतिशील और

बुद्धिजीवी वर्ग के लोगों को ही बढ़चढ़ कर करना होगा। धर्म के ठेकेदार और सत्ता के लालची लोग धर्म को सदा अपने स्वार्थ और फायदे का हथियार बनाकर उपयोग करते रहेंगे। विश्व में व्यर्थ की अशान्ति पनपती रहेगी।

यदि इस्लाम को मानने वाले अधिकांश शिक्षित, बुद्धिजीवी और समृद्ध वर्ग के लोग इन आतंकी तौर-तरीकों की निंदा और विरोध करें तो आतंकवाद को मिलने वाली सुविधाओं पर अंकुश लग सकता है। जब आतंकवाद के लिए जिहादियों को सुविधाएँ ही नहीं मिलेंगी तो वे कहाँ तक आतंक का रास्ता अख्तियार करेंगे।

क्या इस्लाम के उलेमाओं और इमामों, ईसाई धर्म के पोप और पादरियों और अन्य धर्मों के धर्माचार्यों को स्वयं भी पता है कि आखिर धर्म का उद्देश्य क्या है? मंदिरों, मस्जिदों और चर्च में लोगों को क्या सिखाया जाता है-पूजा -पाठ, नमाज, कैंडल जलाकर हम असल में क्या करते हैं? वो होती है प्रार्थना, दुआ और प्रेयर जो कि हमारा सम्पर्क परम शक्ति से करवाती हैं। परम शक्ति से हमारा सम्पर्क तब तक नहीं हो सकता जब तक हम पूर्ण रूप से अपना मन और हृदय सच्चा न कर लें। तभी हमें अपनी हताशा, निराशा और असफलताओं से मुक्ति मिल सकती है। यही है जीवन में आशाओं और सफलताओं के साथ जीने का तरीका।

आज दुनिया का कौन सा ऐसा कार्य है जो धर्म देख कर किया जाता है? क्या मुस्लिम वर्ग के लोगों का जीवन अन्य धर्म के लोगों के बिना सम्भव है या फिर अन्य किसी भी धर्म के लोगों को अपने कार्य व्यवहार में मुस्लिम वर्ग के लोगों की सहायता की आवश्यकता नहीं होती। रोजी-रोटी के लिए धर्म इजाजत देता है तो फिर अन्य कार्यों के लिए धर्म का सहारा क्यों लिया जाता है?

मेरा यह अनुभव है कि दूसरे धर्म के लोगों की अपेक्षा इस्लाम के मानने वाले धर्म के नाम पर जल्दी से भड़क जाते हैं और फिर जिहाद के नाम पर आतंक करते हैं, अगर जिहादियों के मत के अनुसार देखा जाये तो अल्लाह का इस्लाम ही सबसे श्रेष्ठ है। अल्लाह ने ऐसा कोई भी निशान नहीं बनाया जिससे ये साबित होता हो। जो भी निशानियाँ बनाई गई हैं वो सभी आदमी के ही द्वारा बनाई गई हैं।

अगर ये बात सच न होती तो सभी धर्मों के लोगो की पैदाइश से लेकर अन्य सभी तौर-तरीके भी भिन्न-भिन्न होते। ऐसे कौन से धर्म के लोग हैं जिनके भूख, प्यास, नींद, चलना, घूमना और अन्य कार्य करना दूसरे धर्म के लोगों से भिन्न हैं बार-बार सोचने पर भी क्या इसका उत्तर अलग हो सकता है अगर नहीं तो फिर धर्म के अलग होने का क्या मतलब 'ये तो जीवन जीने के अलग-अलग तरीके हैं। सांस्कृतिक भिन्नता जोकि सदियों के विकास का परिणाम है न की किसी धर्म का।'

सच्चे धार्मिक लोगों का कार्य है कि चाहे वे किसी भी धर्म के क्यों न हों, अपना कार्य सच्चाई, ईमानदारी, न्यायपूर्वक और शांतिपूर्वक ढंग से करें। जिसके लिए एक शिक्षित दिमाग की बेहद जरुरत है और इसके लिए धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वासों को त्यागना आवश्यक है। बहके हुए लोगों को विनाश के मार्ग पर जाने से रोकना भी इनका ही कार्य है न कि किसी धर्म के प्रचार-प्रसार में अंधानुकरण का समर्थन करना।

सत्ता, शक्ति और सुविधाओं की प्रचुरता जिन लोगों के हाथ में है वे ही इन अशिक्षित मनुष्यों का दुरूपयोग करते है। जो भी अपने आप को जिहादी कहते हैं असल में वे सभी मूर्खता की पराकाष्ठा का परिचय देते हैं और बिलकुल भी अपनी बुद्धि और समझ का उपयोग नहीं करते। इनमें अन्धविश्वास की जड़ें इतनी गहरी होती हैं कि दिमाग का उपयोग ही नहीं होता।

इनकी आराम पसंदगी भी एक बड़ी बजह है इनको सुविधाओं का भी लालच होता है, ये वो तबका है जिससे ऐशो- आराम और मौज-मस्ती के बदले कोई भी कार्य करवाया जा सकता है। केवल और केवल यही कारण है जो कि आतंकवादी संगठनों के चालकों को ठीक से पता है और वो इसी बात का भरपूर फायदा उठाते हैं।

जितने संसाधनों का प्रयोग आतंक और खून-खरावा करने के लिए किया जाता है। अगर उन्ही संसाधनों का प्रयोग ऐसे अशिक्षित लोगों की शक्ति का प्रयोग उचित और प्रगतिशील ढ़ग से किया जाये, तो विनाश के स्थान पर प्रगति, विकास और निर्माण की दर कई गुना बढ़ जाएगी। विश्व के कई देश आतंक की घटनाओं से ग्रसित हैं, परन्तु आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले देश भी अधिकांशतः परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से आतंकियों को बढ़ावा देते हैं, वे सभी इस्लाम को भी मानते हैं और इन आतंकियों के सरपरस्तों को शरण और आर्थिक सहायता भी प्रदान करते हैं।

वैसे तो इस्लाम को मानने वाले आतंकवाद का नाम इस्लाम से जोड़े जाने पर अपनी खामोशी तोड़ते हैं और आवाज भी उठाते हैं कि पूरी की पूरी कौम के ऊपर ही इल्ज़ाम लगाया जा रहा है और इस्लाम को बदनाम किया जा रहा है। परन्तु आतंकी घटनाओं में दिल-दहला देने वाली अधिकांश घटनाओं पर इस्लाम का बुद्धि जीवी वर्ग, शिक्षित समाज और समृद्धशाली वर्ग शान्त रहता है ऐसा क्यों? क्या उन्हें आतंक की घटनाओं के प्रति कोई संवेदनशीलता नहीं है। फिर क्या यह जिहाद की पट्टी पहने आतंकवाद का समर्थन नहीं माना जाना चाहिए।

अक्ल पर धार्मिक कट्टरता के ताले लगाकर और जिहाद के नाम पर जगह-जगह विनाश को अंजाम देने वाले आखिर किस शक्ति को संतुष्ट कर रहे हैं, जबकि अगर ऐसी कोई शक्ति होती तो इस्लाम के मानने वालों को कोई भी सांसारिक आपदा या अन्य कोई भी परेशानी न होती अगर ये लोग जो अल्लाह के नाम पर सर्वाधिक कट्टरता को मानने वाले हैं। जिहादियों की सभी जरूरतें दूसरे धर्म के लोगों से मेल क्यों नहीं खाती हैं? भूख लगने पर मुँह से खाना क्यों खाते हैं? शरीर ढ़कने लिए कपडे क्यों पहनते हैं? एक और प्रश्न कि सुरक्षित रहने के लिए इमारतों और घरों का निर्माण क्यों करते हैं? यदि धर्म के नाम पर मनुष्य जाति अलग-अलग होती तो सभी मनुष्यों की आवश्यकता भी अलग-अलग होती, सभी धर्मों के लोगों के लिए रोटी, कपड़ा और मकान ही सबसे पहली और जरूरी आवश्यकता है।

इस्लाम के उदय से पहले धर्म के नाम पर युद्धों का कोई इतिहास नहीं पाया जाता। इस्लाम के उदय से पूर्व भी विश्व में कितनी सभ्यताओं का जन्म हुआ और उनके निर्माण और सृजन आधुनिक तकनीकों से भी बेहतर थे जो शायद धर्म के नाम पर न होकर मानव जीवन को और अधिक उम्दा बनाने के लिए ही थे।

सभ्यता के विकास में तलवारें, चाकू, छुरियाँ, भाले, बन्दूकें, बम, तोपें, हथगोले और मिसाइलें सभी का विकास किसी न किसी पर विजय पाने के लिए किया गया। चाहे वो जंगली जानवर हो या कोई और शत्रु या फिर राज्यों के विस्तार के लिए दूसरे राज्य के राजाओं को पराजित करने के लिए। परन्तु आधुनिक समय में विश्व की युद्ध नीतियाँ परिवर्तित हुई हैं। युद्ध सिर्फ ऐसे ही देशों में देखे जाते हैं जहाँ किसी न किसी प्रकार से इस्लाम का वर्चस्व है।

विनाश की लीला के आधार पर धर्म के नाम पर आतंक करने वालों से क्या ये नहीं पूछा जाना चाहिए कि क्या उनके जीवन मृत्यु की विधियाँ दूसरे धर्मों से भिन्न हैं? क्या बीमारियाँ और अन्य अचनाक आने वाली आपदाएं, फायदे और नुकसान केवल दूसरे धर्म के लोगों को ही ग्रसित करती हैं, इस्लाम के मानने वाले सभी इन परेशानियों से मुक्त रहते हैं, क्योंकि उनका धर्म अन्य धर्मों से ज्यादा श्रेष्ठ है। अल्लाह ने आज तक इस्लाम के मानने वालों को कोई परेशानी होने ही नहीं दी। क्या ऐसे देश जहाँ इस्लाम को ही माना जाता है वहाँ भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी और शोषण के प्रकार नहीं होते।

कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रह्माण्ड में अनेकों ऐसे आकर्षण हैं जो बिना किसी धर्म, जाति के मनुष्य के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं। सूरज, चाँद और सितारे का कोई धर्म नहीं है फिर भी उनकी सेवाएँ सभी के लिए सामान हैं। वे इस्लाम के मानने वालों को अपनी कोई अतिरिक्त सेवा नहीं प्रदान करते और न ही किसी अन्य धर्म के अनुयाइयों को उनकी अलग से कोई विशिष्ट सेवा प्राप्त होती है।

इन्हें भी तो किसी न किसी परम शक्ति या ताकत ने बनाया है जिसे सभी अपने अलग-अलग धार्मिक नामों से पुकारते हैं। पृथ्वी पर कितने प्रकार के संसाधन हैं पहाड़, नदियाँ, झीलें, जंगल, खनिज और विकसित सभ्यताओं के साथ ही विकसित हुई अनेकों अनगिनत उपयोगी वस्तुएं और सामग्री क्या हम सभी का धर्म देखकर ही उनका उपयोग करते हैं? क्योंकि इनका कोई धर्म नहीं है। और मनुष्य अपनी जीवन को सरल और सुविधा पूर्ण बनाने के लिए इनको बनाते और उपयोग करते हैं। अगर इनका भी धर्म होता तो क्या होता। यह विचारणीय तथ्य है।

मैं सबसे पहले धर्माधिकारियों, राजनेताओं, उलेमाओं, मौलवी, पादरी और पोप सभी से यह पूछना चाहती हूँ कि- आखिर धर्म को वे क्या मानते हैं और किस तरह परिभषित करते हैं? मुस्लिम, ईसाई, हिन्दुओं आदि वर्गों में मनुष्य जाति में बाँटना या मनुष्य को मनुष्य बनाना। मेरा सभी से प्रश्न है कि-

- आखिर धर्म का उद्देश्य क्या है?
- ईश्वर की सत्ता क्या है?
- ईश्वर की सत्ता में कौन सी शक्ति निहित है?
- ईश्वर की बनाई हुई ऐसी कौन सी मानवीय विविधता है जिसके लिए दंगे-फसाद, आतंक आवश्यक है?

क्या इन सभी प्रश्नों के उत्तर दंगे-फसाद और आतंक के समर्थन में हो सकते हैं? नहीं तो फिर आतंक क्यों?

धर्म या रिलिजन एक व्यापकता वाला शब्द है और मजहब भी इसका ही परिचय है। अब प्रश्न यह है कि आखिर ये धर्म है क्या? और क्यों जन मानस इसके पीछे एक झुण्ड और एक दिशा मैं चलते हैं, बिना किसी परिणाम को सोचे और बिना किसी फायदे के।

यदि विचारपूर्वक ढंग से देखा जाये तो धर्म वह है जिसमें सर्वशक्तिमान परमात्मा जिसका कोई भी नाम हो सकता है उससे-

- मानव जीवन को अधिक से अधिक सफल और समृद्ध बनाने के लिए **'प्रार्थना'** की जाती है, तो धर्म मैं सबसे पहले प्रार्थना का महत्त्व है अलग-अलग धर्मो में इसके अलग-अलग नाम हो सकते हैं- जैसे प्रेयर, दुआ और अरदास आदि।
- ये विविध विधियाँ हैं जो सर्वशक्तिमान परमात्मा का गुणगान करके उसकी शक्तियों को विशेष दिशा में अग्रसरकर परमात्मा को प्रसन्न करके उसकी कृपा प्राप्त करके मनुष्य स्वयं को परिपूर्ण समझता है, और उसको भरोसा हो जाता है कि परमात्मा से उसने जो भी प्रार्थना की है उसका अच्छा परिणाम उसे प्राप्त होगा।
- धर्म के आधार पर मनुष्यों में शाश्वत मूल्यों का विकास किया जाता है जिससे मानव जाति अपनी स्वयं की शक्तियों और सामर्थ्य को मानव जाति के विकास और समृद्धि के लिए प्रयोग कर सके।
  इस प्रकार धर्म में तीन तत्वों की प्रमुखता होती है पहला प्रार्थना, दूसरा प्रार्थना की विधि जैसे- पूजा, नमाज और वरशिप आदि। तीसरा मूल्य, वैल्यू एवं उसूल आदि।

'जब मनुष्य का धर्म परिवर्तन करवाया जाता है तो उसमें मुख्यतः धर्म का नाम परिवर्तित होता है। धर्म के मूल सिद्धांतों में कोई परिवर्तन नहीं आता। धर्म परिवर्तन के पश्चात भी मनुष्य को प्रार्थना करनी होती है। मूल्यों को भी अपनाना होता है जिनके बिना कोई भी विकास, सफलता और समृद्धि के विषय में कल्पना नहीं की जा सकती।'

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. स्वामी, बी०जी० नरसिंहा (२०१६) 'श्रीमद् भगवद्गीता' गोसाईं प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. द टाइम्स ऑफ इण्डिया ग्रुप, इकोनॉमिक्स टाइम्स, द स्पीकिंग ट्री, (२०२०)।
3. ग्राहम कॉर्निश (१८८६) रिलीजश पीरियोडिकल्स डायरेक्टरी।